Sociology

B-I(H) Paper -II

Critically analyse theory of historical materialism propounded by Karl Marx.

or

Critically discuss Marxion economic interpretation of history.

or

Critically discuss the theory of economic determinism developed by Karl Marx.

मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद, या आर्थिक निश्चयवाद या इतिहास की आर्थिक व्याख्या के सिद्धांत का वर्णन करे?

Marx 19वीं शताब्दी के जर्मनी के एक प्रमुख समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, राजनीतिशास्त्री और दार्शनिक विचारक थे। इनके द्वारा प्रस्तुत सिद्धांतो में ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत अथवा इतिहास की आर्थिक व्याख्या का सिद्धांत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस सिद्धांत को प्रस्तुत करने में वे जिन विचारकों से प्रभावित है उनमें Hegel तथा Feuerbach उल्लेखनीय स्थान रखते है। Hegel के द्वन्द्ववाद से सम्बन्धित विचारों से प्रभावित होकर ही Marx ने इतिहास की आर्थिक व्याख्या प्रस्तुत की। इन्होने इतिहास की व्याख्या में आर्थिक कारकों के महत्व को विशेष रूप से दर्शाया है। इसलिए कभी-कभी इनका ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत इतिहास की आर्थिक व्याख्या के सिद्धांत के नाम से जाना जाता है।

Marx के पूर्ववर्ती विचारकों ने भी इतिहास की व्याख्या प्रस्तुत की थी। उन लोगों ने इतिहास की व्याख्या प्रस्तुत करने में अध्यात्मिक, भौगोलिक और जनसंख्यात्मक कारकों को विशेष महत्व दिया था। Marx ने कुछ तर्कों के आधार पर अपने पूर्ववर्ती विचारको के विचारों का खंडन किया और बताया अध्यात्मिक अथवा भौगोलिक और जनसंख्यात्मक कारक इतिहास के निर्णायक कारक नही है। Marx ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि सामाजिक जीवन के विकास में भौगोलिक पर्यावरण तथा जनसंख्यात्मक कारक का कुछ प्रभाव पड़ता है। किंतु इसे निर्णायक कथम नहीं कहा जा सकता। उन्होने बताया है कि अधिक जनसंख्या वाले कुछ समाजो की तुलना में कम जनसंख्या वाले राष्ट्रो में विकास अधिक होना इस बात का द्योतक है कि जनसंख्या इतिहास का निर्णायक कारक नही है। इसी तरह Marx ने Engeles के साथ लिखी अपनी पुस्तक 'Holy family' में यह विचार दिया है कि इतिहास के वास्तविक निर्माता 'वीर नायक' नही बल्कि साधारण जनता होती है।

Marx के इतिहास की आर्थिक व्याख्या के अनुसार प्रत्येक ऐतिहासिक घटना मनुष्यों के कर्मो का परिणाम है। इन्होने यह विचार प्रस्तुत किया है इतिहास

Scanned with CamScanner

मनुष्य की क्रिया को जन्म नहीं देता बल्कि मनुष्य की क्रियाएँ ऐतिहासिक घटना को जन्म देती है। Marx ने पुनः बताया है कि इतिहास महानव्यक्तियों का जीवनवृत या युद्धों का संकलन मात्र नहीं है बल्कि सामान्य लोगों के द्वारा जीवन के लिए आवश्यक सामग्री प्राप्त करने के लिए समय-समय पर परिवर्तन प्रणालियों की श्रृंखला है। इसलिए इतिहास को परिभाषित करते हुए Marx ने लिखा है "यह मनुष्यों के द्वारा अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए की जाने वाली क्रिया है।" (It is the activity of man in pursuit of his ends)

Marx के इतिहास की आर्थिक व्याख्या के अनुसार मनुष्य को इतिहास बनाने के लिए जिंदा रहना आवश्यक है और जिंदा रहने के लिए भोजन, वस्त्र, आवास इत्यादि शुद्ध भौतिक वस्तुएँ आवश्यक है। इस तरह भौतिक वस्तुओं का उत्पादन ही सामाजिक जीवन का निर्णायक तत्व है। Marx के अनुसार उत्पादन की प्रणाली ही समस्त ऐतिहासिक घटनाओं की जननी है। अतः इतिहास के वास्तविक अध्ययन के लिए भौतिक उत्पादन की प्रणालियों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। Marx ने इस बात का भी उल्लेख किया है कि मनुष्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उत्पादन करना ही सर्वप्रथम ऐतिहासिक घटना है। उत्पादन करना एक ऐसा ऐतिहासिक कार्य है जिसके अभाव में मानव का अस्तित्व ही संभव नहीं है। स्वयं मार्क्स के ही शब्दों में "इस प्रकार प्रथम ऐतिहासिक क्रिया उन आवश्यकताओं की संतुष्टी के लिए उत्पादन के साधनों को उत्पन्न करना अर्थात् स्वयं भौतिक जीवन का उत्पादन है।" (The first historical act is thus the production of the means to satisfy these needs, the production of material life itself)

Marx के इतिहास की आर्थिक व्याख्या के अनुसार उत्पादन की प्रणाली ही इतिहास का निर्णायक तत्व है। उत्पादन करने के लिए उत्पादक के उपकरणों (Instruments of production) की आवश्यकता होती है साथ ही उन्होंने बताया है कि उत्पादन के लिए उत्पादक शक्तियों का भी होना आवश्यक है। इतना ही नहीं बल्कि Marx ने उत्पादन के लिए उत्पादन सम्बन्ध होना भी आवश्यक है। स्वयं मार्क्स के ही शब्दों में, " उत्पादन करने के लिए उन्हें परस्पर मिलना तथा एक-दूसरे से निश्चित सम्बन्ध स्थापित करना पड़ता है, और केवल उन्हीं सामाजिक मिलन तथा सम्बन्धों के अन्तर्गत ही उत्पादन कार्य सम्पादित होता है।" (In order to produce, they enter into definite connections & relation with one another & only within these social connections & relations does their action on nature, does production take place)

Marx के इतिहास की आर्थिक व्याख्या के अनुसार उत्पादन की प्रक्रिया दो प्रकार के वर्गों को उत्पन्न करती है इनमें से एक वर्ग वह होता है जिसके हाथ में उत्पादन के सभी

Scanned with CamScanner

साधन केन्द्रित रहता है और दुसरा वह होता है जो केवल श्रम का अधिकारी होता है। पहला वर्ग शासक और धनी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है और दुसरा वर्ग शासित तथा निर्धन वर्ग का प्रतिनीधित्व करता है। किंतु उत्पादन की प्रणाली में परिवर्तन होने के कारण वर्गो के प्रकृति में भी परिवर्तन होता है। marx ने एक उदाहरण देते हुए कहा है कि जब उत्पादन हस्तचालित मशीनों द्वारा होता था था तब सामंतवादी समाज था और समाज सामंत तथा अर्द्धदास किसान (Feudals & Serfes) ये दो प्रमुख वर्ग पाये जाते थे किंतु जब उत्पादन की प्रणाली में परिवर्तन हुआ और वास्पचलित मशीनो का अविष्कार हुआ तब पहले के अर्थव्यवस्था बदल गई और पूँजीवादी अर्थव्यवस्था उत्पन्न हुई। marx ने इस बात का भी उल्लेख किया है कि जिस वर्ग के हाथ में उत्पादन के सभी साधन केन्द्रित रहते है वह वर्ग साधन विहीन वर्ग का शोषण करता है, जबकि शोषित वर्ग के लोग शोषण से मुक्त होना चाहते है। दोनो वर्गो के स्वार्थो में भिन्नता के कारण सदा संघर्ष होते रहता है। marx के अनुसार मानव समाज के इतिहास में प्रत्येक युग में विभिन्न वर्गो के बीच संघर्ष पाया जाता है। इसलिए उन्होने यह घोषणा की कि "अभी तक के सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का ही इतिहास है" (The history of all hither to existing Society is the history of class struggle)

marx के अनुसार इतिहास में युग परिवर्तन होता है किंतु यह परिवर्तन तब होता है जब उत्पादन की प्रकिया में संलग्न सेवक वर्ग अपने संगठन और शक्ति के बल पर क्रांति कर देता है। अतः marx ने यह घोषणा की कि मानव समाज के इतिहास उत्पादन की प्रकिया से उत्पन्न सम्बन्धो के तनाव और वर्ग संघर्ष के द्वारा ही समझा जा सकता है।

marx ने मानव इतिहास को पाँच युगों में विभाजित किया है, जो इस प्रकार से है :-

(1) आदिम साम्यवादि युग (Stage of Primitive communism) → यह मानव समाज के इतिहास का प्रारंभिक युग था। इस युग मे उत्पादन के साधनो पर किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार नही था। बल्कि सम्पूर्ण समुदाय का अधिकार था। इस युग में लोग जंगलो से प्राप्त शिकार और फल से अपना जीवन निर्वाह करते थे।

(2) दासत्व युग (Stage of Slavery) → इस युग में पशुपालन और कृषि कार्य प्रारंभ हुआ और समाज मालिक वर्ग तथा दास वर्ग इन दो मुख्य वर्गो में विभक्त हुआ। मालिक वर्ग के लोग भूमि एवं पशुओं के मालिक थे और दास वे थे जो मालिक के खेतो मे काम करते थे। इस युग में दास प्रथा तथा सम्पति पर व्यक्तिगत स्वामित्व की धारणा उत्पन्न हुई।

(3) सामन्तवादी युग (Stage of Feudalism) → उत्पादन की प्रणाली मे परि-

Scanned with CamScanner

वर्तन होने के कारण सामंत और अर्द्धदास किसान ये दो वर्ग उत्पन्न हुए और सामंतवादी अर्थव्यवस्था उत्पन्न हुई। सामन्त शासक वर्ग के रूप में थे। सामन्त वर्ग के लोग अर्द्धदास किसानों से बेगार लिया करते थे।

(4) पूँजीवादी युग (Stage of Capitalism) → जब वृहद उद्योग धंधो की स्थापना हुई तब पूँजीवादी युग उत्पन्न हुआ। उस युग में पूँजीपति और श्रमिक दो नये वर्ग उत्पन्न हुए। उत्पादन के साधनों पर पूँजीपतियो का स्वामित्व स्थापित हुआ। इस युग में पूँजीपतियों के शोषण से तंग आकर श्रमिक वर्ग के लोग क्रांति द्वारा पूँजीपतियों को उखाड़ फेकने के लिए बाध्य होंगे फलस्वरूप सर्वहारा के अधिनायकत्व की स्थापना होगी। राज्य, समाज और पूँजी की बागडोर श्रमिकों के हाथ में होगी। यह पूँजीवादी और समाजवादी युग के बीच एक संक्रमण का काल होगा।

(5) समाजवादी युग (Stage of Socialism) → Marx के इतिहास की आर्थिक व्याख्या के अनुसार इतिहास का अंतिम युग समाजवादी युग होगा। इस युग में उत्पादन के साधनों पर सम्पूर्ण समाज का अधिपत्य होगा और वितरण लोगो के परिश्रम या योग्यता के अनुसार न होकर उनकी आवश्यकता के अनुसार होगा। इस व्यवस्था में सम्पत्ति का उत्तराधिकारी के रूप में प्राप्त करने की व्यवस्था नही रहेगी।

Marx के इतिहास की आर्थिक व्याख्या के सिद्धांत के सम्बन्ध में यह भी कहा जा सकता है कि उन्होने ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या में एक मात्र आर्थिक कारको के प्रभाव को स्वीकार नही किया है बल्कि उन्होने अन्य कारकों की तुलना में भौतिक या आर्थिक को विशेष महत्व प्रदान किया है।

Engels ने Block के नाम लिखे गये पत्र में भी इस बात का उल्लेख किया है और लिखा है " इतिहास की भौतिकवादी धारणा के अनुसार वास्तविक जीवन में उत्पादन और पुनः उत्पादन ही अंतिम रूप से .... कि एकमात्र निर्णायक तत्व है। भौतिक प्रभाव को इससे अधिक महत्व न मार्क्स और न मैंने प्रदान किया है। यदि कोई हमारे कथनों को तोड़ मरोड़कर इस भांति प्रस्तुत करे कि मार्क्स के अनुसार आर्थिक प्रभाव ही एक मात्र निर्णायक कारक तो ऐसा करके वह भौतिकवादी व्याख्या को अर्थहीन और हस्यास्पद बना देता है।

Criticism (आलोचना)

Marx का उपयुक्त सिद्धांत कुछ रूपों में दोषपूर्ण प्रतीत होता है जो निम्न है:

(1) Marx ने इतिहास की आर्थिक व्याख्या में केवल एक कारक अर्थात आर्थिक या भौतिक कारक को ही इतिहास का निर्णायक कारक मानने की भूल की है।

(2) Marx ने "आर्थिक आधार पर परिवर्तन के साथ सम्पूर्ण विशाल अधिसंस्थना तीव्र या मध्यम गति से परिवर्तित हो जाती है।" सामाजिक परिवर्तन की यह व्याख्या

बहुत समाजशास्त्रियों को मान्य नहीं है। Gillin & Gillin ने अपनी पुस्तक 'Cultural Sociology' में सामाजिक परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न करने में विभिन्न कारकों को समान महत्व दिया है। अतः केवल एक कारक को सामाजिक परिवर्तन का आधारभूत कारक बताने का Marx का विचार उचित नहीं प्रतीत होता है।

(3) Marx ने प्रौद्योगिकी (Technology) में परिवर्तन होने के कारण उत्पादन की प्रणाली में परिवर्तन होता है किंतु प्रश्न उठता है कि Technology में परिवर्तन कैसे और कहाँ से होता है। Marx के इतिहास की आर्थिक व्याख्या का सिद्धांत इस प्रश्न का उत्तर देने में असमर्थ है। फलस्वरूप उनका यह सिद्धांत व्यवहारिक होने की अपेक्षा रहस्यमय हो गया था।

(4) Marx ने अपने इस सिद्धांत में आर्थिक कारक उत्पादन की शक्तियों उत्पादन सम्बन्ध, आर्थिक आधार इत्यादि शब्दों का प्रयोग किया है, किंतु इस शब्दों से स्पष्ट रूप में परिभाषित नहीं किया है। फलस्वरूप इनका यह सिद्धांत भ्रमपूर्ण स्थिति उत्पन्न करता है।

(5) Marx का यह विचार भी आलोचनाओं से रहित नहीं है कि एक प्रकार की Technology उसी के अनुरूप समान आर्थिक व्यवस्था को उत्पन्न करती है, क्यों की एक ही Technology वाले समाज में भिन्न-भिन्न अर्थव्यवस्था देखने को मिलती है और विभिन्न स्तर के प्रौद्योगिकी वाले समाज में भी एक ही अर्थव्यवस्था दृष्टिगोचर होती है।

(6) Marx ने यह लिखकर की "अभी तक के सभी समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है" इतिहास की आर्थिक व्याख्या से संघर्ष के तत्व को विशेष महत्व प्रदान करने की भूल की है। इस बात को मानने से कोई इनकार नहीं कर सकता है कि ~~समाज~~ समाज में सहयोग के भी तत्व महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। अमेरिकन समाजशास्त्री R.M. Maciver & C.H. Page ने भी लिखा है कि "Society is co-operation crossed by conflict"

S. N. Choudhary
1
L.N.M.U

Scanned with CamScanner